http://krishipravahika.vitalbiotech.org/

कृषि प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका

e-ISSN: 2583 – 0430

कृषि-प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका, (2025) वर्ष 5, अंक 10, 57-59

Article ID:492

पर्यावरण शिक्षा और जागरूकता: हर नागरिक की जिम्मेदारी

डॉ. गौतम वीर चौहान[1], डॉ. विनोद कुमार सिंह[2], डॉ. एस. विजय कुमार[3], डॉ. चंद्रकांत एम.एच.[4], डॉ. दिलीप एस[5]

[1]विषय विशेषज्ञ (सस्य विज्ञान), भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद-केन्द्रीय बारानी कृषि अनुसंधान संस्थान, कृषि विज्ञान केन्द्र, रंगा रेड्डी, हैदराबाद-501505
[2]निदेशक, भाकृअनुप-केंद्रीय शुष्कभूमि कृषि अनुसंधान संस्थान, संतोषनगर, हैदराबाद -500059
[3]विषय विशेषज्ञ (कृषि अभियांत्रिकी), भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद-केन्द्रीय बारानी कृषि अनुसंधान संस्थान, कृषि विज्ञान केन्द्र, रंगा रेड्डी, हैदराबाद-501505
[4]वरिष्ठ वैज्ञानिक-सह-प्रमुख, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद-केन्द्रीय बारानी कृषि अनुसंधान संस्थान, कृषि विज्ञान केन्द्र, रंगा रेड्डी, हैदराबाद-501505
[5]विषय विशेषज्ञ (कृषि विस्तार), भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद-केन्द्रीय बारानी कृषि अनुसंधान संस्थान, कृषि विज्ञान केन्द्र, रंगा रेड्डी, हैदराबाद-501505

*अनुरूपी लेखक

डॉ. गौतम वीर चौहान*

आधुनिक युग में पर्यावरण संकट मानव अस्तित्व और सतत विकास दोनों के लिए गंभीर चुनौती है। जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण, जैव विविधता का ह्रास और प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध दोहन इस संकट को और गहरा बना रहे हैं। ऐसे में पर्यावरण शिक्षा और जागरूकता हर नागरिक की साझा जिम्मेदारी बन जाती है। यह केवल सैद्धांतिक ज्ञान तक सीमित न रहकर व्यवहारिक दृष्टिकोण विकसित करती है, जिससे बच्चों, युवाओं और वयस्कों में प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता और जिम्मेदारी की भावना उत्पन्न होती है। मीडिया, सामुदायिक सहभागिता और नीतिगत समर्थन इसके प्रभावी प्रसार के साधन हैं। हालांकि सीमित व्यवहारिकता, बढ़ता प्रदूषण, संसाधनों का अत्यधिक दोहन, और नीतियों के कमजोर क्रियान्वयन जैसी चुनौतियाँ अभी भी मौजूद हैं। इनसे निपटने के लिए अनिवार्य पर्यावरण शिक्षा, शोध एवं नवाचार को प्रोत्साहन, सामुदायिक और संस्थागत सहयोग, डिजिटल माध्यमों का उपयोग तथा हरित जीवनशैली को अपनाना आवश्यक है। इस प्रकार पर्यावरण शिक्षा और जागरूकता न केवल वर्तमान पीढ़ी बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए भी एक स्वच्छ, सुरक्षित और संतुलित जीवन सुनिश्चित कर सकती है।

1. परिचय

आज की दुनिया में पर्यावरण संकट मानव अस्तित्व और भविष्य दोनों के लिए गंभीर खतरा बन चुका है। जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण, जैव विविधता का ह्रास, भूमिगत जल का क्षरण और प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध दोहन हमारे जीवन को प्रभावित कर रहे हैं।

यदि समय रहते उचित कदम न उठाए गए, तो आने वाली पीढ़ियाँ सुरक्षित और स्वस्थ जीवन से वंचित रह जाएँगी। ऐसे में पर्यावरण शिक्षा और जागरूकता केवल आवश्यकता ही नहीं, बल्कि हर नागरिक का नैतिक कर्तव्य और सामाजिक दायित्व है।

पर्यावरण शिक्षा और जागरूकता मानव समाज को सतत विकास की ओर ले जाने का सबसे प्रभावी साधन है। जब हर व्यक्ति यह समझेगा कि उसका छोटा सा योगदान भी धरती को बचाने में महत्वपूर्ण है, तभी हम आने वाली पीढ़ियों को स्वच्छ, सुरक्षित और जीवनदायी वातावरण दे पाएँगे।

आधुनिक युग में पर्यावरण संकट मानव जीवन और वैश्विक विकास दोनों के लिए गंभीर चुनौती बन चुका है। जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण, प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध दोहन और जैव विविधता का ह्रास आज की प्रमुख पर्यावरणीय समस्याएँ हैं। संयुक्त राष्ट्र के अनुसार यदि वर्तमान प्रवृत्तियाँ जारी रहीं तो आने वाले दशकों में पारिस्थितिक संतुलन और मानव जीवन दोनों पर गंभीर खतरे मंडराएँगे। ऐसे में पर्यावरण शिक्षा और जागरूकता केवल आवश्यकता नहीं, बल्कि सतत विकास की आधारशिला है।

कृषि प्रवाहिका
ई-समाचार पत्रिका
http://krishipravahika.vitalbiotech.org
e-ISSN: 2583 - 0430
कृषि-प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका

उद्देश्य

- ✓ समाज में पर्यावरणीय चेतना का विकास करना।
- ✓ बच्चों, युवाओं और वयस्कों में प्रकृति के प्रति जिम्मेदारी की भावना उत्पन्न करना।
- ✓ संसाधनों के संरक्षण और पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखने के उपायों को बढ़ावा देना।
- ✓ नागरिकों को सतत विकास की दिशा में प्रेरित करना।

पर्यावरण शिक्षा का महत्व

पर्यावरण शिक्षा हमें यह सिखाती है कि हमारी दैनिक जीवनशैली और गतिविधियाँ किस प्रकार प्रकृति को प्रभावित करती हैं। यह केवल सैद्धांतिक ज्ञान ही नहीं देती, बल्कि व्यवहारिक दृष्टिकोण भी विकसित करती है जिससे व्यक्ति प्रकृति के प्रति संवेदनशील बनता है।

1. **बच्चों के लिए** – प्रारंभिक स्तर से ही बच्चों को पर्यावरण संरक्षण के मूल्य सिखाने से उनमें जिम्मेदारी की भावना विकसित होती है। छोटे-छोटे कार्य जैसे जल की बचत, पेड़ लगाना या कचरे का सही प्रबंधन, उन्हें पर्यावरण के प्रति जागरूक बनाते हैं।
2. **युवाओं के लिए** – उच्च शिक्षा संस्थानों में पर्यावरण विषय शामिल करने से युवाओं को न केवल वैज्ञानिक दृष्टिकोण प्राप्त होता है, बल्कि वे आधुनिक तकनीक और नवाचारों के माध्यम से सतत विकास की दिशा में योगदान भी कर सकते हैं।
3. **सामान्य नागरिकों के लिए** – पर्यावरण शिक्षा केवल विद्यालय या कॉलेज तक सीमित नहीं है। समाज के प्रत्येक व्यक्ति को यह समझना होगा कि स्वच्छ ऊर्जा का उपयोग, प्लास्टिक पर नियंत्रण और वृक्षारोपण जैसे प्रयास छोटे दिखने के बावजूद सामूहिक रूप से बड़े बदलाव ला सकते हैं।

पर्यावरण जागरूकता की आवश्यकता

पर्यावरण शिक्षा तभी सफल हो सकती है जब इसके साथ जागरूकता भी जुड़ी हो। जागरूकता का अर्थ है—लोगों में पर्यावरणीय समस्याओं के प्रति समझ और उन्हें हल करने की सामूहिक इच्छा का विकास।

- ✓ **मीडिया और संचार**: टीवी, रेडियो, सोशल मीडिया और समाचार पत्र जैसे साधन पर्यावरण जागरूकता फैलाने के लिए प्रभावी माध्यम हैं।
- ✓ **सामुदायिक सहभागिता**: स्वच्छता अभियान, वृक्षारोपण कार्यक्रम, और जल संरक्षण अभियान में लोगों की सक्रिय भागीदारी से सामूहिक चेतना विकसित होती है।
- ✓ **नीतिगत समर्थन**: सरकारों को चाहिए कि पर्यावरणीय शिक्षा और जागरूकता को नीति निर्माण में प्राथमिकता दें और आम नागरिकों को प्रोत्साहित करने वाली योजनाएँ चलाएँ।

नागरिक की जिम्मेदारी

हर नागरिक को यह समझना होगा कि पर्यावरण का संरक्षण सरकार या संस्थाओं का अकेला कार्य नहीं है, बल्कि यह हम सबकी साझा जिम्मेदारी है। यदि हर व्यक्ति अपनी जिम्मेदारी निभाए और अपने आचरण में पर्यावरण-अनुकूल आदतें अपनाए, तो पर्यावरणीय समस्याओं को काफी हद तक कम किया जा सकता है। पर्यावरण संरक्षण केवल सरकार या संस्थाओं की जिम्मेदारी नहीं है। हर नागरिक की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है:

- ✓ जल, ऊर्जा और अन्य संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग करना।

- ✓ एकल-उपयोग प्लास्टिक से बचना और रीसाइक्लिंग को अपनाना।
- ✓ वृक्षारोपण और हरित क्षेत्र बढ़ाने में योगदान देना।
- ✓ पर्यावरण मित्र तकनीकों का प्रयोग करना।

प्रमुख चुनौतियाँ

- ✓ **पर्यावरण शिक्षा का सीमित दायरा और व्यवहारिकता का अभाव** – पाठ्यक्रम केवल सिद्धांत तक सीमित रह जाता है, व्यवहारिक अभ्यास नहीं हो पाता।
- ✓ **शहरीकरण और औद्योगीकरण के कारण बढ़ते प्रदूषण स्तर** – वायु, जल, और ध्वनि प्रदूषण में वृद्धि।
- ✓ **संसाधनों के अंधाधुंध दोहन से पारिस्थितिक असंतुलन** – वनों की कटाई, खनिज और जल संसाधनों का अति-शोषण।
- ✓ **ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में जागरूकता का असमान स्तर** – ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा की कमी और शहरी क्षेत्रों में लापरवाही।
- ✓ **नीतियों और योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन में कमी** – कागज़ पर बने नियम ज़मीन पर सही ढंग से लागू नहीं हो पाते।
- ✓ **जलवायु परिवर्तन और चरम मौसम घटनाएँ** – बाढ़, सूखा, और तापमान में असामान्य उतार-चढ़ाव से चुनौतियाँ बढ़ रही हैं।
- ✓ **प्रौद्योगिकी और औद्योगिक अपशिष्ट का प्रबंधन कठिन** – इलेक्ट्रॉनिक व प्लास्टिक कचरे का निपटान एक बड़ी समस्या।

समाधान

- ✓ **विद्यालयों और विश्वविद्यालयों में पर्यावरण शिक्षा को अनिवार्य बनाना** – पाठ्यक्रम के साथ व्यावहारिक गतिविधियाँ जैसे वृक्षारोपण, रिसाइक्लिंग प्रोजेक्ट।
- ✓ **शोध एवं नवाचार को प्रोत्साहित करना** – वैकल्पिक ऊर्जा स्रोत (सौर, पवन, बायोगैस), अपशिष्ट प्रबंधन, और सतत कृषि पद्धतियाँ।
- ✓ **नागरिक समाज और गैर-सरकारी संगठनों को जोड़ना** – सामुदायिक स्तर पर जागरूकता अभियान और स्वच्छता कार्यक्रम।
- ✓ **सरकारी स्तर पर ठोस नीतियाँ और उनका कड़ाई से पालन** – स्वच्छ ऊर्जा, प्लास्टिक प्रतिबंध, जल संरक्षण कानून, प्रदूषण नियंत्रण।
- ✓ **स्थानीय समुदाय की भागीदारी** – पंचायत स्तर पर पर्यावरणीय समितियाँ बनाना।
- ✓ **डिजिटल माध्यमों का उपयोग** – सोशल मीडिया, मोबाइल एप और डिजिटल प्लेटफॉर्म के जरिए पर्यावरणीय संदेश का प्रसार।
- ✓ **पब्लिक-प्राइवेट पार्टनरशिप मॉडल** – उद्योग, सरकार और समाज मिलकर पर्यावरण संरक्षण योजनाएँ लागू करें।
- ✓ **"हरित जीवनशैली" को बढ़ावा** – कम प्लास्टिक, सार्वजनिक परिवहन का उपयोग, जैविक उत्पादों को अपनाना।

निष्कर्ष

पर्यावरण शिक्षा और जागरूकता से ही सतत विकास का मार्ग प्रशस्त होगा। यह समय की मांग है कि हर नागरिक न केवल प्रकृति के प्रति संवेदनशील बने, बल्कि अपने आचरण में भी ऐसे कदम उठाए जो पृथ्वी को सुरक्षित और स्वच्छ बनाए रखें। क्योंकि स्वस्थ पर्यावरण ही स्वस्थ समाज और सुरक्षित भविष्य की नींव है।